International Journal of Research in Social Sciences

Vol. 8 Issue 4, April 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बिहार में दलित उत्थान हेतु आर्थिक सामाजिककार्यक्रम

दलितों में शिक्षाका अभाव

शोधकर्ता

डा.ललन पासवान

एम.ए , पी.एच.डी(अर्थशास्त्र)

मगध विश्व विधालय बोधगया

अनादिकाल से ही शिक्षा प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकता रही है | क्योकि शिक्षा मानव के विकाश का प्रमुख श्रोत रहा है | इसके द्रारा ही मनुष्य के जन्मजात यक्तियो का विकास होता है | तथा ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि होती है | इसके साथ -साथ व्यक्ति का व्यवहार आधार विचार एवं रहन -सहन में बदलाव आता है जिसके कारण वह सम्य सुसंकृत एवं एक समाजिक प्राणी एवं उनंत देश का नागरिक बन जाता है | शिक्षा ही मानव को अन्य प्राणियों से। श्रेष्ठताप्रदान करता है | शिक्षा के विना मनुष्य पूछ विहिन पशु समान है | संस्कृत एक श्लोक में कहा गया है | कि :-

संगीत , साहित्य कला विहीन साक्षात पशु पुच्छ विनाश हीन -

अर्थात साहित्य संगीत कला विहीनहोताहै | उस व्यक्ति पशुवत है |

Vol. 8 Issue 4, April 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शिक्षा के बिना मानव की प्रगति निशिक्रीय हो जाती है |और मानव तथा अन्य प्राणियों में थोड़े मात्रा की ही अंतर हो जाता है |

शिक्षा ही मानव का सार्वगीन विकाश का पहली कड़ी है | इसी कारण डा० भीमराव अम्बेडकर ने कहाथाकीशिक्षा वह शेरनी का दूध है जो पियेगा वह शेर की तरह दहाडेगा |

शिक्षा के प्रति – महात्मा गाँधी ने कहा की –शिक्षा का जड़ कडवि है पर फल उसका मीठेहोते है |

लेकिन इन कहावत एवं विदानो चितको देश भक्तो के दुवरा बात आज के परिवेश में सार्थक नही प्रतीत होता है कयोकि आदि काल से लेकर आज वर्तमान समय में भी दलितो का शिक्षा में केवल ही नही बल्कि सामाजिक आर्थिक राजनैतिक शैक्षणीक आदि सभी व्यवसायोमें पिछड़ा हुआ दिखाई पड़ता है|

स्वधीनता के 60 वर्ष बीत जाने के बावजूद भी आज दलित समाज जैसे पहले था आज भी वही दिखाई पड़ता है| सामाजजातिवाद उपजातिवाद में बटा हुआ था | वैसे ही आज भी बटा हुआ है | प्राचीनकाल से लेकर आज तक दलित जातियों की स्थति में सुधार नगण्य देखा जाता है |खाशकर शिक्षा क्षेत्रा में ..... नही रहने के कारण आज जो दलित समाज अपनी जीविका के साधन पूर्णतया केवल अपने श्रम की बिक्री से ही हासिल करता है किसी पूँजी से

Vol. 8 Issue 4, April 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हासिल किये गए मुनाफे से नही जिसकी, सुख, भलाई, जिन्दगी और मोत पूरा अस्तित्व श्रम की मांग पर निर्भर है |

दलित समाज की समस्या मुस्लिम आक्रमण करियो या अंग्रेज के आगमन से नही बल्कि उनको आने से पहले से था | इनके सबल नेतत्व करने वाले ज्येतिराव फुले डा० भीमराव अम्बेडकर विरसा मुड़ा आदि के रूप में मिला | इसके पूर्व के इतिहास में दलित समाज का कोई नायक नही था |

2002 में – विश्व मानव विकाश का आंकेंक्षण किया जो प्रकशित हुआ वह चोकाने वाला थी (गरीबी पर हमला)प्रकाशित हुआ जो दलित समाज पर सबसे ज्यादा संकट था | राष्टीय सेम्पल सर्वे के अनुसार ग्रामीणों क्षेत्रा में 60-65 प्रतिशत गरीब दलित परिवार के लोग थे | और शहरी क्षेत्रा में 50-52 प्रतिशत लोगो की अकडा थी |

आज के परिवेश में भूमण्डलीकरण, आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण , कम्प्यूटीकरण तथा सुचना क्रांति दोर में भी दलित समाज पीछे नजर आते है |

चिकित्सा विज्ञान इंजीनियरिग और प्रबधन जैसे पेशेवर पढाईमें आर्थिक रूप से कमजोर परिवार चाहकर इसका खर्च उढासकने मेंसक्षम नही है | ऐसे स्थिति में इसका हिस्सेदारी सिमित है | ऐसेस्थितिमें दलितो का शिक्षा पाना मुश्किल है | हमारा ढाचा इस रूप

Vol. 8 Issue 4, April 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विकसित हुआ की दलित समाज के लिए आगे बढने का रास्ता नही है |

भारतीय अर्थशास्त्रयो समाजशास्त्रियों वुदिजिवियो का मानना था की जैसे आधुनिकरण सेवा वैसे समाज का साथ दलितो का भी आर्थिक प्रगति के बाद शैक्षणीक गतिविधियों में प्रगति होगीलेकिन इसका उल्टा परिणाम हुआ , आर्थिक के साथ साथ शैक्षणीक परिवर्तन भी नगण्य होते जो पुजिवादा अर्थव्यवस्था में दलितो की स्थिति बद से बदतर होते दिखाई पड़ रहा है |

सविधान में मौलिक अधिकारमें यह प्रबधान भी दिया गया है की छः से 14 वर्ष तक के बच्चो का निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दिया जाय इसके बाबजूद दलितो परिवारों के शिक्षा में आभाव पाया जाता है |

गहन परिक्षण के उपरांत पाया गया है की जो जातियाप्रभावशाली तथा बहुसंख्यक थी उन्होंने धीरे धीरे सेवा नियोजन और शिक्षा क्षेत्र तक निर्धारित अपने लिए सिमित सफलता हासिल की है |

आजादी के बाद दो तरफ की शिक्षा निति बनाई गयी इतिहास में जो वर्ग शिक्षा से वचित रहे आरक्षण के माध्यम से मुख्यधारा मे लाने का प्रयास किया जाय |

Vol. 8 Issue 4, April 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दूसरी तरह के निति के तहत गरीब और पीछे छूटे लोगो के छात्रवृति किताब और अन्य रूपों में आर्थिक मदद व्यवस्या की गई | यह देखा गया के कई बच्चे प्राथमिक शिक्षा के बाद आर्थिक चुनोतियो के कारण शिक्षा से अलग हो जा रहे है और माध्यमिक और उच्च शिक्षा वंचित रह जा रहे है कोई भी राजनितिक दल है सभी ने दलितो का शिक्षा का महत्व दिया है, लेकिन इन प्रयासों के बाबजूद हम पाते है की शिक्षा का ग्राफ जनसंख्या के अनुपात में दलितो कासाक्षरता प्रतिशत औरो की अपेक्षा कम है | ऐसा ही उच्च शिक्षामें प्रवेश लेनेवाले छात्र का दर 5 प्रतिशत से भीकम है | यह पूर्ण रूप से लागू नही हो पा रहा है |

आजादी के बाद दलितो की शिक्षा में प्रगति तो हुई लेकिन आई – आई टी० आई एम मेडिकल और उच्च शिक्षा में उनका प्रतिनिधित्व उतना नही है| इसकी वजह आर्थिक स्थिति खराब होना गरीब सामाजिक विभेद इसकी बजह से और स्वधीनता के 65 साल बीत जाने के बाद भी प्रदत अधिकारों के वाबजूद हमारे समाज का बहुत बड़ा हिस्सा आज वंचित है और वह है दलित एवं पिछड़ी जातियों इनका यह एक ज्वलेत समस्या है जो पुरे देश में निगलती जा रही है | आज पिछड़ी जातियों में परिवर्तन देखने कों तो मिल रहा है लेकिन दलित जाति आज भी चोराहे पर खड़ी है | जिसको पेट भरने के आलावा कुछ भी नही दिखाई पड़ता है |

Vol. 8 Issue 4, April 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आज के परिवेश में भूमण्डलीकारण, आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण,क्म्प्र्युटीकरण तथा सूचना क्रांति के इस दोर में सदा से आर्थिक सामाजिक राजनैतिक, शैक्षणिक आदि अधिकारों से वंचित दलित समाज पर गरीबी के संकट और भी वहा दिये है | (2000-2001) केवर्ल्ड डेवल पमेत रिपोर्ट के (गरीबी पर हमला)पर प्रकाशित किया था जो दलित समाज पर सबसे ज्यादा संकट था |

भारतीय अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों शिदनाविद तथा वृद्धिजीवियो का यह मानना था की जैसे-जैसे भारत में आधुनिकीकारण ओधोगिकीकरण, शहरीकरण बढ़ेगा वैसे देश में गरीबी खत्म होगी और दलितो के आर्थिक सुधार होगा, जिसके अमूल परिवर्तन होगा परन्तु ऐसा प्रतीत नही हो नजर आ रहा है नेशनल सैम्पल सर्वे के अनुसार गरीबी रेखा के निचे ग्रामीण क्षेत्रो में 60-65 तथा शहरी क्षेत्रो में 50-52 प्रतिशत माना गया था शहरी क्षेत्रो अन्य समुदायों का सर्वे में इनकी इतना संख्या नही थी | इस प्रकार हम कह सकते है की भारत में कुल गरीबो में अधिकाश दलित है |

भारत में दलितो के गरीबी का अनेको कारण है परन्तु दलितो के पास संशाधनो का धोर आभाव आर्थिक पिछडेपन मुख्य कारण है |

भारत में कृषि जनगण के अनुसार 70.6 प्रतिशत दलितो के पास जमीन नही था | जिसके कारण गरीबी व्यास माना जाता है |

Vol. 8 Issue 4, April 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सरकार कीओरसे जो भी कदम उठायेजाते है वह भी खोखला साबित होता है | दलित इसी तरह संसाधन विहिन है | जिस कारण अपने बच्चो कों पढा नही पाते है |

दलितो की आर्थिक बदहाली का कारण :- इस समुदाय में मजदूरों की बदुलता होती है | 1991 ई० जनसंख्या के अनुशर पुरे देश में 55.37 प्रतिशत लोग अकुशल मजदूर थे | इन संख्या में दलितो मजदूररो की संख्या हर राज्य में अधिक था | इससे हम अनुमान लगा सकते है की दलितो में कितना प्रतिशत शिक्षित होगे |

हरितक्रांति के बाद दलितो कों अपनी खेती से हाथ धोना पड़ा क्योकि मशीनीकारण ने उन्हें कृषि मजदूरों के पंक्तियों में धकेल दिया जिससे इनकी स्थति खराब हुई , और शिक्षा वंचित हुआ |

शहरी खेतों में दलितो मजदूरों की संख्या लगभग 30-40% दैनिक वेतन भोगी है | जो अन्य समुदाय दो से तीन गुणा अधिक है | कही –कही आढ से दस गुणा भी है | दैनिक वेतन योगी मजदूरों की स्थति दायनीय मानी जाति है | रोजगार नही मिलने पर वे घरपर रह जाते जिस कारण स्थिति खराब हो जाता और अपने बच्चो कों शिक्षा समुचित नही दे पाते है | दैनिक वेतन भोगी दलितो के लिए अभिशाप है | इस प्रकार दलितो का इच्छा के अनुसार मेहनत एव पर निर्भर नही होकर उनकी रोज का काम मिलने तथा मजदूरी की मात्रा

Vol. 8 Issue 4, April 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पर निर्भर करता है दैनिक मजदूरी के कारण उनमे बेरोजगारी का संकट ज्यादा होता है | इस समुदाय में अनिशिचता व्यापत रहती है | और वह अपने भविष्य कों नियोजित नही कर पाता है |

दलितो की दयनीय आर्थिक स्थिति का तिसरा कारण – इनमे बहती हुई बेरोजगारी :- अनपढ़ दलित किसान या मिल मजदूर बेकार रहे तो हम कह सकते है | की काश ये शिक्षित होते तो इनका रोजगार हेतु रोना भी पड़ता परन्तु शिक्षित बेरोजगार हो तो यह स्थितिऔर व्यावह होती है |

के अपेक्षा कम उच्च शिदना पाता है | उच्च वर्गों का ज्यादा तदाद इसलिए होता है | क्योकि सामाजिक आर्थिक चुनैतियो का सामना नही करना पड़ता है | इसकी एक इतिहासिक पृष्ठ भूमि है जिसका उन्हें लाभ मिलता है |

शिक्षा में सुधार की दरकार :-

मेरी अपनी राय है की शिक्षा निति और प्रभावी बनाने के लिए कोढारी आयोग के सिफारिशों कों लागु किया जाय जैसे – केन्द्रीय कर्मचरियो के लिए केन्द्रीय विधालय सैनिक स्कुल गांव के मेरिट वाले बच्चों के लिए नवोदय एव समान्य बच्चों कों नगर निगम विधालय है इस तरहकी असमनता हमलोगों में ही पैदा कर दी है | अच्छे स्कुल कों खत्म करके आम लोगो के लिए उपलब्ध शिक्षा व्यवस्था में अद्यापक

Vol. 8 Issue 4, April 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

से लेकर सामग्रीतक सुधार तो लाये ताकि गरीब दलित के बच्चे शिक्षा पा सके |

इनका कमियों कों दूर किया जा सके |

उच्च शिक्षा में गुणवता सुधार की जरूरत है ताकि दलित पिछड़े एवं आदिवास महिला पुरुष अल्प संख्यक उच्च शिक्षा प्राप्त कर सके |

मूल्य आधरित शिक्षा :- छात्रों की जरूरत है मूल्य आधरित शिक्षा नैतिक समाजिक शिक्षा होना जरूरी है |

हम देखतेहैकी आज भी समाज के शिक्षित वर्ग में समाज और देश की समस्याओको समझ ही नही है आज भी शिक्षित वर्ग समाज और देश की सकारत्मक दृष्टि का अभाव है |

शिक्षा का समान अवसर आर्थिक सुरक्षा मूल्य आधरित शिक्षा समाजिक समप्रदीयिक और लोग विवाद जैसी समस्याओ का अवगत कराया जाय , जिससे दलितों में शिक्षा के स्तर में सुधार लाया जा सके |

उच्च शिक्षा उदेश्य एव उपललव्धता – केपी० मिश्र

मध्यप्रदेश के SSक्षेत्र सर्दभ में

शिक्षा एव दलित की दशा – अरुण कुमार वेफ जे

Vol. 8 Issue 4, April 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जनजातिओ के शिक्षा में प्रगति और समस्या / सीमा पाढ़क सिन्हा

दलित समाज और शिक्षा – सत्यकेतु संस्कृत –

सामाजिक न्याय की शिक्षा – नीरज कुमार झा

उच्च शिक्षा के पटल पर दलित महिलाओ की स्थिति सामाजिक विषमता का स्वरूप शालू एव संदीप सिह –

वंचित वर्ग की शिक्षा विविध आयम –

इस प्रकार दलित वर्गों अनेको कारण शिक्षा से वंचित है |

समाजिक कारण – आर्थिक कारण संस्कृति कारण राजनैतिक कारण आदि वर्तमान समस्या है |

अगर इन सभी कारणों के संघ – राज्य एवं पंचायती राज्य सरकार दुवार कड़ाई से पालन किया जाय तो शिक्षा के क्षेत्र में दलितों के आगे लाया जा सकता है |